"कोटन मे कोऊ भजन राम को पावै"

• साधो रचना राम बनाई । इकि बिनसै इक असथिर माने अचरज लखिओ न जाई ।1।रहाउ।

अर्थः- हे संत जनो ! परमात्मा ने जगत की ये आश्चर्यजनक रचना रच दी है कि एक मनुष्य तो मरता है पर दूसरा मनुष्य उसे मरता देख के भी अपने आप को सदा टिके रहने वाला समझता है । ये एक आश्चर्यजनक तमाशा है जो बयान नहीं किया जा सकता ।

काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई । झूठा तन साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई।1।

अर्थः- हे संत जनो ! मनुष्य काम के, क्रोध के, मोह के काबू में रहता है और परमात्मा की हस्ती को भुलाए रखता है । ये शरीर सदा साथ रहने वाला नहीं है, पर मनुष्य इसे सदा कायम रहने वाला समझता है जैसे रात को सोते समय जो सपना आता है मनुष्य नींद की हालत में उस सपने को असली घटित हो रही बात समझता है ।

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई । जन नानक जग जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ।2।

अर्थः- हे संत जनो ! जैसे बादल की छाया सदा एक जगह टिकी नहीं रह सकती, वैसे ही जो कुछ जगत में दिखाई दे रहा है ये सब कुछ अपने - अपने समय में नाश हो जाता है । हे दास नानक ! जिस मनुष्य ने जगत को नाशवान समझ लिया है, वह सदा स्थिर रहने वाले परमात्मा की शरण पड़ा रहता है ।

• साधो मन का मान तिआगउ । काम क्रोध संगत दुरजन कीता ते अहिनिस भागउ ।1। रहाउ।

अर्थः- हे संत जनो ! अपने मन का अहंकार छोड़ दो । काम और क्रोध भी बुरे मनुष्य की संगत समान ही हैं । इससे भी दिन रात हर वक्त परे रहो ।

सुख दुख दोनो सम करि जानै अउर मान अपमाना । हरख सोग ते रहै अतीता तिन जग तत पछाना ।1।

अर्थः- हे संत जनो ! जो मनुष्य सुख और दुख दोनों को एक समान जानता है, और जो आदर व निरादर को भी एक समान जानता है । कोई मनुष्य उसका आदर करे तो भी परवाह नहीं, और जो मनुष्य खुशी और गमी दोनों से निर्लिप रहता है खुशी के समय अहंकार में नहीं आ जाता

और गमी के वक्त घबरा नहीं जाता उसने जगत में जीवन के भेद को समझ लिया है ।

उसतत निंदा दोऊ तिआगै खोजै पद निरबाना । जन नानक इहु खेल कहन है किनहूं गुरमुखि जाना ।2।1।

अर्थः- हे संत जनो ! उस मनुष्य ने अस्लियत ढूँढ ली है जो ना किसी की खुशामद करता है ना ही किसी की निंदा, और जो उस आत्मिक अवस्था को सदा तलाश करता है जहां कोई वासना छू नहीं सकती । पर हे नानक ! ये जीवन खेल - खेलनी मुश्किल है । कोई विरला मनुष्य ही गुरु की शरण पड़ कर इसे समझता है ।

• प्रानी कउ हरि जस मनि नही आवै । अहिनिस मगन रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ।1। रहाउ।

अर्थः- हे भाई ! मनुष्य को परमात्मा की महिमा अपने मन में बसानी नहीं आती । हे भाई ! बताओ, वह मनुष्य कैसे परमात्मा के गुण गा सकता है जो दिन रात माया के मोह में मस्त रहता है ?

पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आप बधावै । मृग त्रिसना जिउ झूठो इह जग देखि तासि उठि धावै ।1।

अर्थः- हे भाई ! माया के मोह में मस्त रहने वाला मनुष्य पुत्र,मित्र,माया आदि की ममता से बंधा रहता है, और इस तरह अपने आप को मोह के बंधनों में बांधे रखता है । माया - ग्रसित मनुष्य ये नहीं समझता कि ये जगत तो ठगनीरे की तरह ठगी ही ठगी है, जैसे हिरन मारीचिका को देख कर उसकी ओर दौड़ता और भटक - भटक के मरता है, वैसे ही मनुष्य इस जगत को देख कर इसकी ओर सदा दौड़ता रहता है और आत्मिक मौत अपनाता है ।

भुगति मुकति का कारन सुआमी मूड़ ताहि बिसरावे । जन नानक कोटन मै कोऊ भजन राम को पावे ।2।3।

अर्थः- मूर्ख मनुष्य उस मालिक प्रभु को भुलाए रखता है जो दुनिया के सुखों और भोगों का भी मालिक है और जो मोक्ष भी देने वाला है । हे दास नानक ! कह करोड़ों में कोई विरला मनुष्य ही होता है जो जगत ठगनीरे के मोह से बच के परमात्मा की भक्ति प्राप्त करता है ।

• मन रे कहा भइओ तै बउरा । अहिनिस अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संग हउरा ।1। रहाउ।

अर्थः- हे मेरे मन ! तू कहां लोभ आदि में फंस के पागल हो रहा है ? हे भाई ! दिन - रात उम्र घटती रहती है, पर मनुष्य ये बात समझता नहीं और लोभ में फंस के कमजोर आत्मिक जीवन वाला बनता जाता है ।

जो तन तै अपनो करि मानिओ अर सुंदर ग्रिह नारी । इन मै कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ।1।

अर्थः- हे मेरे मन ! जो ये शरीर, जिसे तू अपना करके समझ रहा है और घर की सुंदर स्त्री को तू अपनी मान रहा है, इनमें से कोई भी तेरा सदा निभने वाला साथी नहीं है, सोच के देख ले, विचार के देख ले ।

रतन जनम अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी । निमख न लीन भइओ चरनन सिउ बिरथा अउध सिरानी ।2।

अर्थः- हे मेरे मन ! जैसे जुआरी जूए में बाजी हारता है, वैसे ही तू अपना कीमती मानव जनम हार रहा है । क्योंकि तूने परमात्मा के साथ मिलाप की अवस्था की कद्र नहीं पाई । तू रत्ती भर समय के लिए भी गोबिंद प्रभु के चरणों में नहीं जुड़ता, तू व्यर्थ उम्र गुजार रहा है ।

कहु नानक सोई नर सुखीआ राम नाम गुन गावै । अउर सगल जग माइआ मोहिआ निरभै पद नही पावै ।3।8।

अर्थः- हे नानक ! कह, वही मनुष्य सुखी जीवन वाला है जो परमात्मा का नाम जपता है, जो परमात्मा के गुण गाता है । बाकी का सारा जहान जो माया के मोह में फंसा रहता है वह सहमा रहता है, वह उस आत्मिक अवस्था पर नहीं पहुँचता जहां कोई डर छू नहीं सकता ।

• नर अचेत पाप ते डर रे । दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम पर रे ।1।रहाउ।

अर्थः- हे गाफिल मनुष्य ! पापों से बचा रह और इन पापों से बचने के वास्ते उस परमात्मा की शरण पड़ा रह, जो गरीबों पर दया करने वाला है, और सारे डर दूर करने वाला है ।

मानस देह बहुर नह पावै कछू उपाउ मुकति का कर रे ।
नानक कहत गाइ करुना मै भवसागर के पार उतर रे ।2। 9।

(9-218-220)

अर्थः- हे गाफिल मनुष्य ! तू ये मानव शरीर फिर कभी नहीं पा सकेगा इसे क्यूँ पापों में लगा के गवा रहा है ? यही समय है, इन पापों से मुक्ति प्राप्त करने का कोई इलाज कर ले । तुझे नानक कहता है तरस - रूप परमात्मा के गुण गा के संसार समुंदर पार हो जा ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"